



# पराग ऑनर लिस्ट 2020

टाटा ट्रस्ट्स के पराग इनिशिएटिव द्वारा बच्चों और किशोर पाठकों के लिए हिंदी और अंग्रेजी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तकों की परिष्कृत संग्रह सूची है 'पराग ऑनर लिस्ट'। यह प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है जिसमें साल भर में प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की सूची, प्रत्येक शीर्षक के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाती है। यह सूची बाल साहित्य के विशेषज्ञों द्वारा कई स्तरों की स्क्रीनिंग एवं समीक्षाओं के पश्चात तैयार की गई है। इसके प्रकाशन का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य की एक व्यापक उत्कृष्ट सूची को लाइब्रेरियन, शिक्षकों, अभिभावक और बच्चों तक पहुंचाना है। जो इन्हें पढ़ें और दूसरों को सुझाएँ भी।

इस वर्ष की सूची के लिए तय चयन मानदंडों के अनुसार हमें 26 भारतीय प्रकाशकों से कथा, कथेतर एवं कविता विधाओं में पुस्तकें प्राप्त हुईं। ये मूल लेखन की पुस्तकें विगत अक्टूबर 2018 से लेकर सितंबर 2019 के बीच विभिन्न श्रेणियों जैसे चित्र-पुस्तक, नव एवं किशोर पाठक में प्रकाशित हुई हैं।

हमें उम्मीद है कि यह सूची वृहत पाठक वर्ग को सर्वश्रेष्ठ भारतीय बाल साहित्य तक की पहुंच के लिए समर्थ करेगी।

## कथा

### चित्र पुस्तक



**कैसा-कैसा खाना**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2019 में प्रकाशित

**लेखक प्रभात चित्रांकन** रलेन शाँ

बच्चों को शब्दों को उलट-पुलट कर देखना अच्छा लगता है। यह किताब पढ़ना सीख रहे शुरुआती पाठकों को कुछ ऐसा ही आनंद देगी। एक शब्द 'खाना' को लेकर पूरी किताब में चुलल की गई है। किन-किन शब्दों के साथ खाना शब्द जुड़ता है और कैसे-कैसे संज्ञाओं और क्रियाओं को रचता है इसे लेखक और चित्रकार ने आनंद लेकर दिखाया है। यह सही अर्थों में एक चित्र-पुस्तक है। भाषा और छवियों की साझेदारी इस किताब में दिखती है। यह इस वर्ष की एक अच्छी, आनंददायक किताब है।



**छुटकी और चीरो**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2019 में प्रकाशित

**लेखक मंजरी सिंह चित्रांकन** प्रशांत सोनी

छोटी सी, प्यारी कहानी जो दो अलग अलग इरों और उनके खत्म होने की कहानी है। बेहद कोमल भाव को केंद्र में रखकर रची गयी यह चित्र-कथा बड़े भाषाय की गाथा बन जाती है --निर्भयता की गाथा। चित्र कथा को प्रस्तुत भी करते हैं और उनके पूरक भी हैं। यहाँ शब्द और चित्र की जुगलबंदी है।

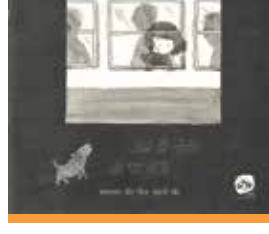


**तालाब के किनारे**  
प्रकाशक: मुस्कान  
2018 में प्रकाशित

**लेखक सोनिया अग्रिया चित्रांकन** सौम्य भोबेरॉय

जंगल, पेड़ पौधों और जीवों तथा तालाब के माध्यम से पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति एवं एक दूसरे के सुख दुख में साथ होने की भावना को जाग्रत करने वाली संक्षिप्त किंतु मार्मिक कथा।

यहाँ लोककथाओं का भी तत्व है। जंगल की रहस्य को सरल शब्दों में व्यक्त किया गया है। स्याह-सफेद चित्र वातावरण को साकार करते हैं।



**जब मैं मोती को घर लाई**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक शब्दरहित चित्र पुस्तक चित्रांकन** प्रोईती राँय

हर लिहाज से उत्कृष्ट किताब। एक बच्ची एक पिल्ले से इतना जुड़ाव महसूस करने लगती है कि वह हर समय उसी के बारे में सोचती है और उसे घर लाना चाहती है। माँ शुरू शुरू में बहुत संवेदनशील नहीं है, लेकिन धीरे-धीरे मोह में पड़ी बच्ची की मनोदशा समझ उसे घर ले आने को तैयार है। अंतिम पन्ने पर शब्दों का अचानक चले आना एक नया और सुखद प्रयोग है, जैसे अंतर्मन में चल रहे भाव अचानक शब्दों से छुए गए। चित्रों में बच्चों के चित्रों की सी सहजता है जो कलात्मक युक्ति के रूप में सामने आती है।

## कविता

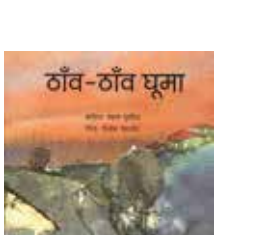
### चित्र पुस्तक



**चीटी चढी पहाड**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2019 में प्रकाशित

**लेखक कवि समूह चित्रांकन** प्रोईती राँय

इस संकलन से पता चलता है कि सस्ती छपी किताबें भी कितनी सुरुचिपूर्ण हो सकती हैं। प्रभात और सुशील की कवितारं बहुत अच्छी हैं। अच्छी किताब का फोर कलर भी होना कतई जरूरी नहीं। प्रोईती राय के चित्रों में बच्चों के चित्रों की सी सहजता है।



**ठाँव-ठाँव घूमा**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2018 में प्रकाशित

**लेखक श्याम सुशील चित्रांकन** निलेश गहलोत

कविता लयात्मक और सुमधुर है। सुमधुर ध्वनियों और आनुप्रासिक प्रयोगों के कारण पढ़ना सीख रहे शुरुआती पाठक इस किताब की ओर आकर्षित होंगे। 'अर्कोर्डियन फोल्ड' के कारण इस किताब को पलटने में भी एक खेल है।

अर्थ के स्तर पर भी यह एक अच्छी कविता है। भाव के स्तर पर कविता में स्वतंत्रता और खुलेपन का भाव है। अपने अग्रुठ डिजाइन, सांगीतिक भाषिक प्रयोगों और खुलेपन के भाव के कारण यह इस वर्ष प्रकाशित हुई किताबों में एक अच्छी किताब है।



## कथा

### नव पाठक



**चश्मा नया है**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2018 में प्रकाशित

**लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ चित्रांकन** शुभम लखेरा

यह 'अंकुर सोसाइटी फॉर अल्टरनेटिव्स इन 'इडुकेशन' के बच्चों द्वारा लिखी गयी कहानियों का संकलन है। यह एक असाधारण संग्रह है। इस संग्रह को पढ़कर लगता है कि बच्चों के लेखन को संपादित करके प्रकाशित करना बुरा विचार नहीं है। 'आई की बकबक', 'नेकलेस', 'दुआ', 'पुत्री का झूठ पिता के नाम', 'खिड़की, हवा, मछली और मैं' अलग अलग लेखन है तो उतना ही कहानी लेखन भी है। लगता है बच्चे खुद ही वह साहित्य रच लेते हैं जिसकी उन्हें भावनात्मक या बौद्धिक जरूरत महसूस होती है।



**टिटहरी का बच्चा**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ चित्रांकन** भार्गव कुलकर्णी

यह एक अनूठी कथा-पुस्तक है जिसे स्वयं बच्चों ने अपनी जिन्दगी की बातों, घटनाओं और लोगों से बनाया है। लेकिन यह हाशिर का जीवन है। यहाँ ध्यान की निंदा है, जंगल में अचार बीनने की कहानी है, टिटहरी का बच्चा है और कबूतर का चोंचरा जैसी मार्मिक कथा है। सब सच की और सब को अपनी बोली में बच्चों ने लिखा है। ऐसी रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह हर पढ़ने वालों को दूर दूर तक जिन्दगी और लोगों तक ले जाती है जिससे हमारा हृदय और मन बड़ा होता है।



**बकरी की साईकिल**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2018 में प्रकाशित

**लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ चित्रांकन** बच्चों के चित्र

यह भी एक अनूठी किताब है। इसे खुद बच्चों ने तैयार किया है। बातें भी उनकी हैं और साथ के चित्रांकन भी उनके हैं उनके साथियों के। ये कहानियाँ इस अर्थ में हैं कि इनमें कुछ न कुछ घटना है और खुद उनके साथ या उनके साथ के लोगों के साथ घटना है। ये अपने जीवन की सच्ची कहानियाँ हैं जिनमें कई तरह के खट्टे मोठे अनुभव हैं, फसल कटाई से लेकर स्टेशन पर खोने और अपनी बैस की कहानी भी। ये पढ़ने वाले के भीतर प्रेम, दुलार और सच्चाई के भाव विकसित करती हैं।

## कथेतर

### चित्र पुस्तक



**दो बहनों की मसाई मारा यात्रा**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक कमला भसीन चित्रांकन** बीना काक

नर अनुभवों से गुजरने के लिए और नई-नई खोजों के लिए व्यक्ति का स्वतंत्र होना जरूरी है। यात्रा की बेहतरीन कहानियाँ अत्यल्प रूप से 'स्वतंत्रता' को एक मूल्य के तौर पर प्रतिष्ठित करती हैं। इस दृष्टि से यह किताब बहुत महत्वपूर्ण है। आमतौर पर औरतें जब यात्रा पर निकलती हैं तो परिवार के साथ निकलती हैं जिसमें पुरुष होते हैं और पुरुष ही यात्रा का नेतृत्व करते हैं। इस किताब में जिन यात्रियों का विवरण है वे बिना किसी पुरुष को साथ लिए इस यात्रा पर निकल जाती हैं। इस तरह यह हीसला देने वाली और इस वर्ष की महत्वपूर्ण किताब है।



## कविता

### नव पाठक



**चार चटोरे**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2019 में प्रकाशित

**कवि वीरेन्द्र दुबे चित्रांकन** नबरीना सिंह

यह छोटी-छोटी कविताओं का संग्रह है जिन्हें एक ही कवि ने लिखा है। यह बहुत प्यारी कविताओं का संग्रह है जो आस-पास के विषयों को आधार बनाकर रची गयी हैं। छंदोबद्ध हैं और लय इतनी सरल कि तुरंत कंठस्थ हो जाएँ। ऐसी निर्दोष कविताएँ कम देखने को मिलती हैं। चित्रांकन भी प्रभावकारी है और कविता की संगत करता है। इन कविताओं की एक खूबी इनकी भाषा का कौतुक भी है जो कल्पना को नयी उड़ान देता है।



**हाऊ-हाऊ हप्प**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2018 में प्रकाशित

**कवि कवि समूह चित्रांकन** कनक शशि

यह हिन्दी की कालजयी बाल कविताओं का अनूठा संकलन है जहाँ वे कविताएँ भी हैं जिन्हें आज के बच्चों के दादा के दादाओं ने अपने बचपन में पढ़ा था और वैसे कविताएँ भी हैं जो पहली बार किसी संकलन में प्रकाशित हो रही हैं किंतु जिन सब को आज से सौ साल बाद भी इतने ही प्यार से पढ़ा और सुना जाएगा। यहाँ भाषा और शब्दों के खेल हैं, तुकों का अप्रत्याशित बंदिश है वे बिना किसी पुरुष को साथ लिए इस यात्रा पर निकल जाती हैं। इस तरह यह हीसला देने वाली और इस वर्ष की महत्वपूर्ण किताब है।

## कथा

### किशोर पाठक



**घुड़सवार**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक उदयन वाजपेयी चित्रांकन** तपोशी घोषाल

इस किताब में तीन कहानियाँ हैं और पाँच कथेतर गद्य हैं। ये गद्य मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियों से जुड़ी गतिविधियों पर केन्द्रित हैं - देखना, सुनना, स्पर्श, गन्ध और स्वाद। देखना, सूना आदि महज जैविक गतिविधियाँ भी हैं। इन जैविक और मानवीय गतिविधियों पर इत्मीनान से रस लेकर विचार किया गया है। किताब में शामिल तीनों कहानियाँ में पारम्परिक शैली की कथाओं जैसा कथारस है, लेकिन ये कहानियाँ जीवन की कुछ गहरे अस्तित्वगत उलझनों को भी सामने लाती हैं।



**चमनलाल के पायजामे**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2019 में प्रकाशित

**लेखक अनिल सिंह चित्रांकन** तपोशी घोषाल

इस संग्रह की एक यादगार कहानी है बंदरों की कवि-समाधि जो मनुष्य की विकास की दौड़ में मारे गए हैं। और उनकी मृत्यु को एक बच्चे की दृष्टि से पाठक को महसूस करवाना लेखक से परियेकता की अपेक्षा करता है। इस किताब में ऐसा लगता है कि हर कहानी के केंद्र में जैसे लेखक का अपना ही बाल-रूपी किरदार हो। कस्बाती और ग्रामीण जीवन के जीवंत विवरण एकदम आत्मकथात्मक गल्प की विधा में धीरे-धीरे खुलते हैं और पाठक तो एक तरह का काव्य-सुख प्रदान करते हैं।



**पेपर चोर**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2019 में प्रकाशित

**लेखक वरुण ग़ोवर चित्रांकन** चंद्रमोहन कुलकर्णी

इन कहानियों में वर्णित चरित्र प्रायः किसी विनाशकारी स्थितियों से गुजरते हुए दिखते हैं। ये कहानियाँ जितना बाहरी उथल-पुथल को व्यक्त करती हैं, उतना ही चरित्रों की भीतरी मनोदशाओं, स्वभाव, आकांक्षाओं और आशंकाओं को भी व्यक्त करती हैं। शिल्प के स्तर पर अकसर ये कहानियाँ यथार्थवादी शिल्प में शुरू होती हैं, लेकिन अकसर यथार्थवादी शिल्प का अतिक्रमण कर फंतासी में चली जाती हैं। प्रत्येक कहानी के कुछ महत्वपूर्ण दृश्यात्मक पहलुओं को चित्रांकन के माध्यम से उजागर किया गया है।



**रानू मैं क्या जानूँ?**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक असगर वजाहत चित्रांकन** अरनु राँय

यह एक भिन्न कोटि की किताब है जहाँ कथा-संवाद की शैली में कोई अप्रचलित बात कही जाती है और वाद-विवाद के लिए प्रेरित किया जाता है। मासूम से लगने वाले संवाद पूरी व्यक्तियों को ही कठघरे में खड़ा करते हैं। पर ये बहुत मनोरंजक भी हैं, कई बार चुटकुलों जैसे। इन्हें पढ़ते हुए उसे बच्चों के याद आ सकती है जिसने पहली बार कहा था कि राजा नंगा है। दिये गये रेखांकन भी कथानक को सजीव बनाते हैं जो लगातार स्याह कूची से बने हैं।



# पराग ऑनर लिस्ट 2020

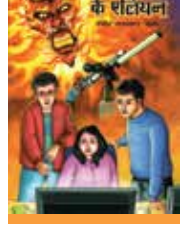
बच्चों और किशोर पाठकों के लिए  
हिंदी और अंग्रेजी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तकों  
की परिष्कृत संग्रह सूची



parag  
AN INITIATIVE OF  
TATA TRUSTS

कथा

## किशोर पाठक



**रेड सन के रलियन**  
प्रकाशक: चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट  
2019 में प्रकाशित

**लेखक संजीव जायसवाल**  
'संजय'

इस किताब की सबसे खास बात यह है कि पृथ्वी पर रलियन द्वारा हमले का रहस्य का पर्दाफाश करने वाले व्यस्क वैज्ञानिक नहीं लेकिन युवा विद्यार्थी हैं। भीतर के चित्र कुछ अच्छे हैं, कुछ छपाई में बिगड़ गए हैं। लेकिन इसपर यूँ ही ध्यान नहीं जाता क्योंकि आख्यान इतना दमदार है। युवा विद्यार्थियों के प्रति कुछ उदारतावादी भाव भी दीख पड़ते हैं, लेकिन चूँकि रहस्य सुलझाने में युवा लोग ही सफल होते हैं, इसलिए यह लेखक की सोची-समझी आख्यानात्मक युक्ति भी हो सकती है कि जिन्हें केवल महान वैज्ञानिक के सहायकों के रूप से आमंत्रित किया जाता, उन्हें ही रलियन का भंडाफोड़ करने करने का श्रेय जाता है।



**सप्पू के दोस्त**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक स्वयं प्रकाश**  
**चित्रांकन रलेन शाँ**

यह कहानियाँ किशोर-दृष्टि से बुनी गयी हैं जहाँ साधारण घटना भी अर्थवान बन जाती है, जैसे ट्रेन की यात्रा या बगीचे में अमरूदों की चोरी जो जीवन के बड़े मूल्यों की ओर संकेत करती है। इनकी विशेषता यह है कि यहाँ कथानक, पात्र और भाषा सब आस पास के जीवन के हैं। और हर कहानी हमें बेहतर इन्सान बनाती है, हाँलाकि ये कहीं भी सायास उपदेशालक नहीं हैं। कहानियाँ मजेदार भी हैं और अंत तक ध्यान बाँधे रखती हैं। चित्र स्थितियों को उभारते हैं और रंग अलग से ध्यान नहीं खींचते।



**बिकसू**  
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन  
2018 में प्रकाशित

**लेखक वरुण ग्रीवर**  
**चित्रांकन राजकुमारी**

'बिकसू' भावासीय विद्यालय में पढ़ने वाले इमारखंड के एक शमीण बालक की कहानी है। बिकसू पढ़ते हुए पाठक संवेदनात्मक और बौद्धिक स्तर पर समृद्ध होंगे ऐसा कई कारणों से लगता है। बिकसू की कहानी में एक तरफ भ्रमर स्थानीय रंग गादरे हैं तो दूसरी तरफ यह कथा सार्वभौमिक कथाभूमि पर भी एक लकीर खींची चलती है। यह कथा जितना बाहर चलती है उतना ही भीतर भी। मुख्य पात्र की स्मृतियों और मानसिक द्वंद्वों को भाषा, चित्र और ले आउट डिजाइन सभी स्तरों पर अभिव्यक्त करने की कोशिश की गई है।



**बचपन की बातें**  
प्रकाशक: रकलव्य  
2018 में प्रकाशित

**लेखक संजीव ठाकुर**  
**चित्रांकन रिया पटेल**

जानी मानी हस्तियों के बचपन के बारे में इस तरह से लिखी गयी है जैसे आत्मकथा लिखी जाती है। शैली एकदम सहज, बोधगम्य, और रोचक। संगीत, विज्ञान, सिनेमा, साहित्य, पक्षी-विज्ञान आदि क्षेत्रों से बड़ी हस्तियों के बचपन चुने गए हैं। बड़ों के बचपन को ज़रा भी रूमानियत से नहीं देखा गया है। लगभग हर बचपन में ऐसी कई अप्रिय बातें भी हैं जो आम तौर पर व्यक्ति छिपाने की कोशिश करता है। बड़े होने की प्रक्रिया में इस किताब का किसी युवा पाठक को मिल जाना एक सुखद और प्रेरणादायक अनुभव सिद्ध होगा।



## जूरी कहते हैं...

**अरुण कमल**

अरुण कमल हिन्दी कवि एवं निबंधकार हैं। उनकी कविता के छह संग्रह एवं तीन चयन तथा साहित्य संबंधी निबंधों की तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनकी बच्चों के लिए दो किताबें छप रही हैं, जिनका नाम है हवाकिमाई एवं एक चौर की चौदह राते। अरुण कमल पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक रहे हैं। उन्हें कविता के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (१९९८), भारतीय भाषा परिषद का समग्र कृतित्व सम्मान(१९९४) समेत अनेक पुरस्कार मिली है।

सबसे पहले तो मेरा ध्यान भाषा पर जाता है। भाषा सरल हो, पर मुहावरेदार और चित्रात्मक। शब्दों का खेल और ध्वनियों की नयी लयकारी हो, खासकर कविताओं के मामले में। मैं यह भी देखता हूँ कि इस रचना में नया क्या है। अगर कुछ नया है तो पढ़ने सुनने वाले को भी नयी दृष्टि मिलेगी। अरुण यह कहानी या उपन्यास है तो कथानक को स्पष्ट और घटनाओं को परस्पर संबद्ध होना चाहिए और पात्र भी सुगठित हों। रचना यथार्थ पर आधारित होकर भी कल्पना लोक में विचरण करे और एक कलाईडोस्कोप की तरह जीवन प्रसंगों से नर और तरह-तरह के बिम्ब बनाये। लेखन कभी भी अंत निराशा या पराजय पर न हो। नेकी और अच्छाई की जीत का संदेश या भाव होना ही चाहिए। पर ऐसा न लगे कि बलात् उपदेश पिलाया जा रहा है। मुझे वो किताब या रचना सबसे अच्छी लगती है जो मैं एक साथ देखूँ, सुनूँ और पढ़ूँ।

**मनोज कुमार**

मनोज पिछले दो दशकों से हिन्दी साहित्य और स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने नब्बे के दशक में दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. और एम. फिल. की डिग्री हासिल की और कुछ समय तक अलग-अलग विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्यापन किया। सम्प्रति वे अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में 'हिन्दी भाषा-शिक्षण और 'शिक्षा के समाजशास्त्र' के अध्यापन से जुड़े हुए हैं। 'बाल साहित्य' के क्षेत्र में मनोज की विशेष रुचि है क्योंकि यह शैक्षिक गतिविधि का एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें शिक्षा के साथ साहित्यिक और सौंदर्यशास्त्रीय विमर्श की गुंजाइश है।

प्राथमिक कक्षा में जब विद्यार्थी भाषा के विविध प्रयोगों से गुजरते हुए उन्हें सीख रहा होता है तब उन्हें साहित्यिक रचनाओं का आस्वाद मिले यह जरूरी है। बाल साहित्य रचनात्मक लेखन की एक ऐसी पहलकदमी है जो इगमगाते कदमों से भाषा में टहलना-बोलना शुरू कर रहे पाठकों की ऊँगली थामकर उन्हें नई रचनात्मक दुनिया में ले जाने को तत्पर है। जाहिर है बाल साहित्य ऐसा तभी कर पाएगा जब वह अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से आर बच्चों के जीवनानुभवों से खुद को समृद्ध करेगा। पिछले कुछ दशकों में कम से कम हिन्दी के कुछ लेखकों का ध्यान अलग-अलग सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश में बचपन के अलग-अलग तरह के अनुभवों गुजर रहे बच्चों की ओर गया है। हिन्दी में बच्चों के लिए ऐसा साहित्य भी लिखा जा रहा है जिनमें बुनियादी अस्तित्वगत प्रश्नों और नैतिक उलझनों से जूझने का रचनात्मक हौसला दिखता है।

## जूरी कहते हैं...

**तेजी ग्रीवर**

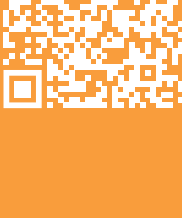
तेजी ग्रीवर कवि, कथाकार, चित्रकार, अनुवादक हैं। बाल-साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए उन्होंने कई बाल-पुस्तकें भी तैयार की हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। इनका नाम है हवाकिमाई एवं एक चौर की चौदह राते। अरुण कमल पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक रहे हैं। उन्हें कविता के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (१९९८), भारतीय भाषा परिषद का समग्र कृतित्व सम्मान(१९९४) समेत अनेक पुरस्कार मिली है।

बच्चों का साहित्य मुझे उम्र की सीमाओं से ऊपर उठाकर मेरे अंदर के बच्चे और वयस्क को सहजता से जोड़े रखता है। अच्छे बाल साहित्य में वयस्कता और बालपन को एक ऐसे नैरन्तर्य में पिरो देने ने की क्षमता होती है जो हर उम्र के मनुष्य के लिए हस्ती के सुख-दुःख से रूबरू होने में सहायक सिद्ध होती है। मुझे यकीन है कि बच्चों के लिए एक अच्छी किताब, बड़ों के लिए भी एक और भी बेहतर किताब सिद्ध होती है क्योंकि वे कभी खुद बच्चे रहे हैं और वे इस बात की गहराई से वाकिफ हैं कि अपने बढते वर्षों में उन्होंने किन अभावों को झिद्धत से महसूस किया है। मेरे अनुसार बच्चों की किताबों में आनंद, आश्चर्य, करुणा और अंतर्दृष्टि की साझा भावना का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिन्दगी में आने वाले किसी भी दुःख या निराशा को बिना उम्मीद खोए एक गहन स्वीकर भाव से ग्रहण कर पाने की क्षमता भी अच्छे बाल साहित्य के पाठ से मुझे बखूबी मिल जाती है।



parag  
AN INITIATIVE OF  
TATA TRUSTS

टाटा ट्रस्ट्स का पराग इनिशिएटिव 'पढ़ने की बदलावकारी ताकत' के विश्वास से संचालित है और जो यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहा है कि पूरे भारत भर के बच्चे विशेष रूप से विविध भाषाओं में पढ़ने का रस व आनंद ले सकें। बाल साहित्य के सोसिंग, प्रकाशन व प्रसार के लिए पराग के तीन माँडल्स ने बच्चों और युवाओं के बीच आनंदपूर्ण पठन को प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों के साहित्य, पठन और साक्षरता के पारिस्थितिकी तंत्र को उत्प्रेरित किया है।



Visit us:  
[www.paragreads.in](http://www.paragreads.in)

Contact us:  
[paragreads@tatatrusters.org](mailto:paragreads@tatatrusters.org)

Follow us:

[@ParaganinitiativeofTataTrusts](https://www.facebook.com/ParaganinitiativeofTataTrusts)

[@ParagReads](https://www.instagram.com/ParagReads)